प्रातःक्लास 27-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2रूहानी बच्चो अर्थात आत्माओं को, रूहानी बाप अर्थात परमपिता परमात्मा बैठपढ़ाते हैं, समझाते हैं। क्योंकि बच्चे ही पावन बनस्वर्ग के मालिक बनने वाले हैंफिर से। सारे विश्व का बाप तो एक ही है। यह बच्चों को निश्चय होता है। सारे विश्व का, सभी आत्माओं का बाप तुम बच्चों को पढ़ा रहे हैं, इतना दिमाग में बैठता है। क्योंकि दिमाग है तो तमोप्रधान लोहे का बर्तन। आयरनएजेड। दिमाग आत्मा में होता है। तो इतना दिमाग में बैठता है। इतना ताकत है समझने की कि बरोबरबेहद का बाप हमको पढ़ा रहे हैं। बेहद विश्व को, बेहद सृष्टि को पलटते हैं। इससमय बेहद सृष्टि को दोजख कहा जाता है। यह मानते हो या समझते हो गरीबदोजख मेंहैं और बाकीसन्यासीसाहुकार, बड़े2 मर्तबे वाले बहिश्त में हैं। बाप समझाते हैं सभी हैं सभी दोजख में हैं। इसमें भी बड़े2 विद्वान पंडित, जो बहुत बड़े2 आदमी हैंबहुतधनवान हैं वह तो और ही बड़े दोजखमें हैं। यह सभी समझने की बातें हैं। आत्मा कितनी छोटीहै। इतनी छोटी सी आत्मामें सारी नालेज ठहरती है या भूल देते हैं। विश्व के सभी आत्माओं का बाप तुम्हारे सामने बैठे तुमको पढ़ाते हैं दिमाग में बैठता है। घंटा आधा घंटा या सारा दिन? यह दिमाग में रखने की भी ताकत चाहिए। ईश्वर परमपिता परमात्मा तुम पढ़ाते हैं। सारा दिन यह बुधि में याद रहता है। बरोबर बाबा हमारे साथ यहां हैं। बाहर में जब अपने घरों में रहते हो वहां तो साथ नहीं हैंनाश्यहां प्रैक्टीकल मेंतुम्हारे साथ हैं। जैसे कोई का पति बाहर है पत्नि यहां है तो ऐसे थोड़ेही कहेंगे हमारे साथ है। बेहद का बाप तो एक ही हैं। बाप सभी में तो नहीं होगा ना। तो यह दिमाग में आता है कि बेहद का बाप हमको नई दुनिया का मालिक बनाने लायक बना रहे हैं। बल में इतना अपने लायक समझते हो। हम सारे विश्व के मालिक बनने वाले हैं। इसमें तो बहुत खुशी की बात है। इससे ज्यादा खुशी का खजाना तो कोई को मिलता नहीं हैं। अभी तुमको मालूम पड़ा है हम यह बनने वाले हैं। अभी देवतायें कहां के मालिक हैं। तुम समझते हो हम भारत में ही देवतायें होकर गये हैं। यह सारे विश्व के मालिक थे। जिनके राज्य को हेविन, स्वर्ग कहा जाता है। तुम्हारे दिमाग मेंयह ठहरता है कि हम यह विश्व के मालिक बनने वाले हैं। इतना दिमाग में है। वह चलन है। वह बात-चित करने का ढंग है। कोई बात में झट गुस्सा कर दिया, किसको नुकसान पहुंचाया। किसकी ग्लानी कर दी ऐसे चलन तो नहीं चलते। कलियुग में यह कब ग्लानी थोड़ेही करते हैं। वहां ग्लानी की छी छी ख्यालातवाले होंगे ही नहीं। बाप तो बच्चों को कितना जोर से उठाते हैं। तुम बाप को याद करो तो पाप कट जावेंगे। तुम हाथ उठाते हो परन्तु ऐसी बात है। बाप बैठ पढ़ाते हैं, यह दिमाग में जोरसे आता है। बाबा जानते हैंबहुतों को सोडा वाटर हो जाता सभी को इतना खुशी का पारा नहीं चढ़ता। जब बुधि में बैठे तबनशा चढ़े। बाप विश्व का मालिक बनाने के ही पढ़ाते हैं ना। यहां तो सभी हैं पतितरावण सम्प्रदाय। कथा है ना। राम ने बन्दरों की सेना ली। फिर यह था... अभी तुम समझते हो बाप रावण(माया) पर जीत पहनाकर यह बनाते हैं। मनुष्यों के दिमाग में जैसेकुछ है नहीं। एकदम गोबर भरा पड़ा है। कुछ भी समझते नहीं। यहां तुम बच्चों से कोईपूछते हैं तुमफ्ट से गे हमको भगवान पढ़ाते हैं। भगवानुवाच-जैसे टीचर कहेंगे हम तुमको बैरीस्टर अथवा फ्लाना बनाते हैं। निश्चय पढ़ाते हैं और वह बन जाते हैं। पढ़ने वाले नम्बरवार होते हैं ना। फिर नम्बरवार पद पाते हैं। यह भी हैपढ़ाई। एमआबजेक्ट सामने दिखा रहे हैं। तुम समझते हो इस पढ़ाई से हम यह बनेंगे। खुशी की बात है ना। बी०एस० पढ़ने वाले समझेंगे ना हम यह पढ़कर फिर यह करेंगे, घर बनावेंगे। ऐसा करेंगे। बुधि में चलता है यहां फिर तुम बच्चों को बाप बैठ पढ़ाते हैं। सभी को पढ़ना है, पवित्र बनना है। बाप से प्रतिज्ञा करनी है कोई भी अपवित्र काम न करेंगे। बाप कहते हैं अगर कोई उल्टा काम कर लिया तो की कमाई चट हो जाती। यह मृत्युलोक पुरानी दुनिया है। हम पढ़ते हैं नई दुनिया के लिये। यहपुरानी दुनिया तो खत्म हो जानी प्रलय का वातावरण भी ऐसे ही है। बाप हमको पढ़ाते हैं अमरलोक लिये। सारी दुनिया का चक्र बाप बैठ समझाते

हैंहाथ में कोई भी किताब आदि नहीं। औरली ही बाप बैठ पढ़ाते हैं। पहली2 बात समझाते हैं अपन को आत्मा निश्चय करो। हम आत्मा, भगवान बाप के बच्चे हैं। परमपिता परमात्मा परमधाम में रहते हैं। हम आत्मायें भी वहां ही रहती हैं। हम आत्मायें भी रहतीवहां ही हैं फिर वहांसे नम्बरवार यहां आ जाते हैं पार्ट बजाने लिये। यह बड़ी बेहद की स्टेज हैं। इस स्टेज पर पहले2 एक्टर्स पार्ट बजाने भारत में नई दुनिया में आते हैं। यह उन्हों की एक्टविटी है तो उन्हों की महिमा भी गाई जाती है। क्या उन्हों को तुम मिलटी लीयन कहेंगे। इन लोगों के पास तो अनगिनत अथाह धन रहता है। बाप तो ऐसे ही कहेंगे नायहलोग ... क्योंकि बाप तो हेड है ना। यह भी ड्रामा बना हुआ है। तो जिस शिव बाबा ने इन्हों कोऐसा साहुकार बनाया तो भक्ति मार्ग में उनका(शिवका) मंदिर बनाते हैंपूजा के लिये। पहले2 उनकी पूजा करते हैं जिसने पूज्य बनाया। बाप रोज2 समझाते हैंनशा चढ़ाने लिये। परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो समझते हैं वह सर्विस में लगे रहते हैं तो ताजे रहते हैं ना। नहीं तोपारबुधी हो जाते हैं। बच्चे जानते हैं बरोबर यह भारत में राज्य करते थे। तो और कोई धर्म नहीं था। डीटिज्म ही था। फिर बाद में और2 धर्म आये हैं। अभी तुम समझते हो यह सृष्टि का चक्रफिरता है। स्कूल में एमआबजेक्ट तो पहले चाहिए ना। सतयुग आदि में यहराज्य करते थे फिर 84 के चक्र में आये हैं। बच्चे जानते हैं यह है बेहद की पढ़ाई। जन्म-जन्मांतर तो हद की पढ़ाई पढ़ते आये हो। इसमें बड़ा निश्चय चाहिए। सारी सृष्टि को पलटाने वाला, रजोवेन्ट करने वाला अर्थात नर्क को स्वर्ग बनाने वाला बाप हमको पढ़ा रहे हैं। इतना जरूर है मुक्ति/धाम तो सभी जा सकते हैं। स्वर्ग में तो सभी नहीं आवेंगे। यह अभी तुम जानते होहमको बाप इस विषय सागर सेवेश्यालय से निकालते हैं। अभी बरोबर वेश्यालय है ना। कब से शुरू हुआ हैयह भी तुम जान चुके हो। 2500वर्ष हुआजब कि यह रावण राज्य शुरू हुआ। भक्ति शुरू हुई है। उस समय देवी देवता धर्म वालेजो हैवह वापमार्ग में गये। भक्ति के लिये ही मंदिर आदि बनाते हैं। सोमनाथ का मंदिरकितना बड़ा बनाया। हस्ट्री तो सुनी है। मंदिर में क्या! तो उस समय कितने धनवान होंगे। सिर्फ एक मंदिर तो नहीं बना होगा ना। हस्ट्री में कर के एक का नाम डाला है। मंदिर तो बहुत ही राजायें बनाते हैं ना। सिर्फ एक मंदिर तो हो नहीं सकता। एक दो को देख पूजा तो सभी करेंगे ना। ढेर मंदिर आदि होंगे। सिर्फ एक को नहीं लूटा होगा। दूसरे भी मंदिर उस के पास होंगे। वहां गांव कोई दूर2 नहीं होते हैं। एक दो के नजदीक ही होते हैं। क्योंकि वहां ट्रेन आदि तो नहीं होंगीना। बहुत नजदीक एक दो के रहते होंगे। फिर आस्ते2 सृष्टि फैलती जाती है। अभी तुम बच्चे पढ़ रहे हो। बड़े बड़ा बाप तुमको पढ़ाते हैं। यह तो नशा होना चाहिए ना। घर में भी कवरोना पीटना न है। वहां ही तुमको देवीगुण धारण करनी है। इस पुरुषोत्तम संगम युग पर तुम बच्चों को पढ़ाया जाता है। यह है बीच का समय जब कि तुम चेंज होते हो। पुरानी दुनिया से नई दुनिया में जाना है। अभी तुम पुरुषोत्तम युग पर पढ़ रहे हो। भगवान तुमको पढ़ाते हैं। सारी दुनिया को पलटाते हैं। पुरानी को नया बना देते हैं। जिस नई दुनिया का तुमको फिर मालिक बनना है। बाप बांधाहुआ है तुमको युक्ति बताने लिये। तो फिर तुम बच्चों को भी उस पर अमल करना है। यह तो समझते हो जो कुछ रिपीटहुआ वह भी एक्यूरेट ड्रामा। भल मुख से कहते भी हैं कि यह नाटक है। परन्तु समझते नहीं हैं। तुम यह थोड़ेही जानते थे कि हमारी राजधानी थी। अभी बाप ने बताया है रावण राज्य के तुम बहुत दुःखी हो। इनको कहा ही जाता है विकारी दुनिया। यह देवी देवतायें हैं सम्पूर्ण निर्विकारी। अपन को विकारी कहते हैं। अभी यहरावण राज्य कब से शुरू हुआ हैं कोई को जरा भी पता है? नहीं। बुधि बिल्कुल ही तमोप्रधान बनगई है। बेहद के बाप की बैठ ग्लानी करते कि वह सर्वव्यापी है। समझते नहीं हैं। नाम ही है पत्थर बुधि। पारस बुधि सतयुग में थे। तो विश्व के मालिक। अथाह सुखी थे। इन्हों का नाम ही सुखधाम। यहां तो अथाह दुःख है। सुख दुनिया और दुःख की दुनिया कैसी यह भी बाप बैठसमझाते हैं। सुख कितना समय दुःख कितना समय चलता है। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते।

तुम्हारे मैं भी नम्बरवार समझाते रहते हैं। समझाने वाला तो है बेहद का बाप। कृष्ण को बेहद का बाप थोड़ेही कहेंगे। दिल से लगता ही नहीं। परन्तु किसको बाप कहेंगे। तो शास्त्रों मे इनको लगा दिया है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। कृष्ण तो ऐसे कह न सके। अभी तुम समझते हो मनुष्य कुछ भी नहीं जानते। बिल्कुल ही तुच्छ बुधि हैं। सभी भुक्त का खाते हैं। भक्ति मार्ग मे है ही सभी झूठ। ग्लानी ही बताते रहते हैं। यह भी एक खेल बना हुआ है। बाप खुद कहते हैं तुम मुझे गाली देते थे ना। भगवान के लिये क्या2 कहते हो। कच्छ अवतार मच्छअवतार। कितनी डर्टी भ्रष्ट बुधि हो गये हैं। जिसको पुकारते हैं हे पतित-पावन आओ। फिर उनके लिये कहते हैं पत्थर भितर मे है। बेहद का बाप जो तुमको मुक्ति-जीवनमुक्ति का वरसा देते हैं। फिर भक्ति मार्ग मे जब रावण राज्य मे आते हैं तो तुम्हारी बुधि कितनी भ्रष्ट हो जाती हैं। बाप कहते हैं यदा यदा हि ... भारत मे जब ग्लानी होती है। किसकी? भगवान बैठ समझाते हैं मेरी ग्लानी करते हैं। फिर देवताओं की भी ग्लानी कर दी है। मैं जो तुमको देवता बनाता हूं मेरी कितनी ग्लानी करते हो। इतने पत्थर बुधि मूढ़मति मनुष्य बन पड़े हैं। कहते हैं ना भज गोविन्द मूढ़मति। बाप कहते हैं हे मूढ़मति गोविन्द राम2 भजो। अकल मे कुछ भी आता नहीं किसको भजें। पत्थर बुधि मूढ़मति ही कहेंगे। बाप कहते हैं अभी मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूं। बाप सर्व का सदगति दाता है ना। बाप बैठ समझाते हैं तुम अपने परिवार आदि मे कितने फंसे हुये हो। भगवान जो कहते हैं वह तो अमल मे लाना चाहिए ना। परन्तु आसुरी मत पर हारे हुये हैं। तो ईश्वरीय मत पर चले कैसे। गोविन्द कौन है क्या चीज़ है वह भी जानते नहीं। बाप बैठ समझाते हैं। तुम कहेंगे बाबा आप ने अनेक बार हमें समझाया है। यह भी ड्रामा मे नूंध है। बाबा हम फिर से आप से यह वरसा ले रहे हैं। हम नर से नारायण बनेंगे। स्टुडन्ट को पढ़ाई का नशा रहता है ना। हम यह बनेंगे। निश्चय रहता है। अभी बाप कहते हैं तुमको सर्वगुण सम्पन्न बनना है। कोई से क्रोध आदि न करना चाहिए। देवताओं मे 5 विकार होते ही नहीं। श्रीमत पर चलना चाहिए। श्रीमत पहले2 कहती है अपने को आत्मा समझो। तुम आत्मा परमधाम से यहां पार्ट बजाने आये हो। यह तुम्हारा शरीर विनाशी है। आत्मा तो अविनाशी है ना। तो तुम अपने को आत्मा समझो। मैं आत्मा परमधाम से रहने वाला हूं। यहां आये हैं पार्ट बजाने। अभी यहां दुःखी हुये तब कहते हैं मुक्तिधाम जावें। परन्तु तुमको पावन कौन बनावे। बुलाते भी हैं एक को। तो वह एक बाप आकर कहते हैं हे मेरे मीठे2 बच्चों अपने को आत्मा समझो। देह न समझो। मैं आत्माओं को बैठ समझाता हूं। आत्मा ही बुलाती हैं हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ। भारत मे ही पावन थे। अभी फिर बुलाते हैं पावन बनाकर सुखधाम मे ले चलो। कृष्ण के साथ तुम्हारी प्रीत तो है। कृष्ण के लिये सबसे ज़ास्ती वर्तनेम आदि कुमारियां बातायें आदि रखती हैं। निर्जल रहती हैं। कृष्णपुरी अर्थात सतयुग मे जावें। परन्तु ज्ञान न होने कारण बड़े हठ आदि करते हैं। निर्जल रहते हैं। इतना यह सभी तुम करते हो कोई को रास्ता बताने लिये। खुद कृष्णपुरी मे आदि मे जाने लिये यह रास्ता आदि बताते हैं। हठयोग आदि करते हो। तुमको कोई रोकता नहीं हैं। किसको तुम तंग नहीं करते हो। वह लोग गवर्मेन्ट के आगे फास्ट आदि करते हैं हठ करते हैं तंग करने लिये। तुमको कोई पास धरना नहीं मार कर बैठना है। न कोई ने तुमको सिखलाया। आपे ही तुम चलते हो आपस मे मिलकर। श्रीकृष्ण तो है सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स। परन्तु यह किसको भी पता नहीं हैं। कृष्णको वह द्वापर मे ले गये हैं। इतने बड़े2 विद्वान आदि जिनके इतने चेले चाटे बनते हैं। कुछ भी नहीं समझते। गायन है ना गुरु जिसके अंधले चेले सत्यानास। गुरु भी सत्यानास तो चेले को भी सत्यानास हुई पड़ी है। बाप बैठ समझाते हैं मीठे2 बच्चों ज्ञान और भक्ति दो अलग2 चीज़ें हैं। ज्ञान है दिन। भक्ति है रात। कैसे? ब्रह्मा का दिन ज्ञान ब्रह्मा की रात भक्ति। परन्तु इनका अर्थ न गुरु ही समझते न चेले ही समझते तो हुआ गुरु जिसके अंधेले .. ज्ञान, भक्ति, वैराग्य का राज़ बाप ने तुम बच्चों को समझाया है। ज्ञान दिन भक्ति रात इनके बाद फिर है वैराग्य। किसका वैराग्य? वह जानते ही नहीं। सिर्फ ऐसे ही अक्षर कह देते हैं। ज्ञान भक्ति वैराग्य। अक्षर है स्क्युरेट। परन्तु अर्थ नहीं समझते। अभी तुम बच्चे समझ गये हो ज्ञान बाप देते हैं तो उसरे दिन

हो जाता है। फिर भक्ति शुरू होती है तो रात कहा जाता है। क्योंकि धक्का खाना पड़ता है। आधा कल्प है दिन आधा कल्प है रात। भक्ति मार्ग में रात थी तुम ब्राह्मणों की। ब्रह्मा की रात सो ब्राह्मणों की रात। फिर होता है दिन। ज्ञान से क्या होता है। फिर भक्ति से रात हो जाती है। रात में तुम वनवास में बैठे हो। फिर दिन में कितना धनवान बन जाते हो। तुम जानते हो यहां हम वनवास में बैठे हैं। यहां क्या सुखलेना है। यह तो अल्प काल का सुख है। अभी देखो सुख फिर अभी2 दुःख। झगड़ा ही झगड़ा लगा पड़ा है। इसको आरफन वर्ल्ड कहा जाता है। एक भी मनुष्य बाप को नहीं जानते। ठिक्कर भिक्षर में कह देते हैं। तो बाप जो बैठ समझाते हैं उसको अच्छी रीत धारण करना चाहिए। बाबा बार 2 समझाते हैं यहां तुम बच्चे बैठे हो अपने को आत्मा समझ बैठो। हम आत्माओं को भगवान पढ़ाते हैं। है भी बराबर भगवानुवाच। अभी भगवान किसको कहा जाये। इतने बड़े2 सन्यासी विद्वान आदि भी नहीं जानते। भगवान तो पुनर्जन्म में आते ही नहीं। वह तो बाप है। बाप के बदली बच्चा जो 84 जन्म लेते हैं उनके लिये कह देते हैं भगवान है। इनको कहा ही जाता है। गांवरे का छोरा। उनका फिर कृष्ण नाम थोड़ेही होगा। नाम तो हर जन्म में बदलता रहता है। नाम रूप देश काल फिचर्स सभी बदल जाते हैं। कृष्ण को गांवरे का छोरा कैसे कहेंगे। इतना भी किसकी बुधि में नहीं आता है। बात तो बराबर ठीक है। भिन्न2 नाम रूप लेते2 गांवरे का छोरा आकर बनते हैं। फिर बाप कहते हैं जिसको तुम छोरा कहते हो बहुत जन्मों के अन्त में उनमें ही मैं आकर प्रवेश करता हूं। जब इनकी वानप्रस्त अवस्था होती है तब मैं इन में प्रवेश करता हूं। 84 जन्मों के बाद आकर छोरा बनते हैं। खुद बताते हैं छोटेपन में हम पूरा छोरा था। अर्थात निर्धनका, गरीब बिल्कुल। तो यह समझना चाहिए यह अनादि बना बनाया खेल है। इसमें सभी एक्टर्स हैं। ड्रामा को तो अभी तुम जान गये हो। जो2 पुनर्जन्म लेते रहते हैं ड्रामा अनुसार फिर वही रिपीट करेंगे। बना बनाया यह ड्रामा है। सभी को पार्ट मिला हुआ है। रोने आदि की दरकार ही नहीं। अनादि हरेक को अपना पार्ट मिला हुआ है। यह अनादि अविनाशी ड्रामा है ना। इनकी अन्त अथवा आदि है नहीं। बाकी हां पुराना सो नया, नया सो पुराना बनता है। यह भी तुम बच्चों को समझाया जाता है। पुरानी को नया, कलियुग को सतयुग कौन बनाता है। बाप को ही यह पार्ट मिला हुआ है। ड्रामा के प्लैन अनुसार बाप ही आकर नर्क को स्वर्ग बनाते हैं। बाप कहते हैं ऐसे नहीं कि मैं जो चाहूं सो करूं तुमको कहते हैं ना तुम्हारा दादा ईश्वर है तो यह कर के दिखावे ना। अरे यह तो ईश्वर हो कैसे सकता। यह कहां कहते हैं मैं ईश्वर हूं। ईश्वर तो निराकार गुप्त है। यह थोड़ेही अपने को ईश्वर कहलाते हैं। यह तो कहते हैं मैं गांवरे का छोरा था। ब्रह्मा की रात है ना। ब्रह्मा का फिर दिन तो हम देवता बन जाते हैं। तुम सभी यहां मनुष्य से देवता बनने आये हो। मानुष ते देवता किये करत ना लागे बार। नानक भी इनकी महिमा करते हैं ना। खुद भी कलियुग में आया हुआ है। इस समय सभी तमोप्रधान हैं। तब तो कहते हैं असंख्य चोर हराम खोर। नानक नीच कहे विचार ... वह कहते हैं विचार तो करो वारियां नजावां एक बार ... तुम कितना वारी बाप पर वारी जाते हो। भक्ति मार्ग में कहते हैं बाबा आप आवेंगे तो हम आप पर ही वारी जावेंगे। यह बनाबनाया है परन्तु अर्थ नहीं समझते। सदा सलामत तो है ना। उनको अविनाशी कहा जाता है। वह लोग तो बिगर अर्थ ही कहते रहते हैं। भटक भिसल टूं2 करते रहते हैं। भगवान को पहले नम्बर की गाली देने वालों के आगे पांव पड़ते रहते हैं। कुछ भी समझ नहीं है। तो बाप फिर भी बच्चों को समझाते हैं एक तो तो बाप को अच्छी रीत याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें। तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम बच्चों के लिये तो जरूर नई सृष्टि चाहिए ना। गायन भी है पुरानी सृष्टि पर पांव नहीं धरते। उन्हों को नई दुनिया चाहिए। तो जरूर पुरानी का विनाश होगा ना। अभी बाकी थोड़ा टाईम है। कैसे विनाश होता है वह भी समझ की बात है। हर 5000 वर्ष बाद यह चक्र फिरता रहता है। लाखों वर्ष की भेंट से 5000 वर्ष क्या हैं। 1% भी सच नहीं कहते। तो बाप कहते हैं मूल बात तो बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें। बाकी पुण्य जमा होता रहता है जिससे तुम पुण्यात्मा बन जावेंगे। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।